NH Thumbs-up – 74

"हुस्न-ए-तदवीर से जाग उठता हैं नसीब कौम का,
कभी बदलती नहीं तकदीर अरमानों से"

जब भी दो चार जाट इकट्ठा बैठते हैं तो उनमे पहला सवाल यही होता हैं कि जाटों मे एकता क्यों नहीं होती? जाटड़ा और काटड़ा अपने को ही क्यों मारता हैं? वैसे पहली बात तो जाट एक मस्त मौला और दबंग कौम मानी जाती हैं और दबंग मस्त मौले लोग बिना बात बिना मुद्दे के इकट्ठा नहीं हुआ करते| एकता किसी मुद्दे को लेकर होती हैं, कौम हित के साझा मुद्दे तय करो फिर देखो एकता कैसे नहीं होती हैं| कई लोग कहते हैं कि सर छोटूराम ने सभी धर्मों के जाटों को एक कैसे किया था? सर छोटूराम ने कौम को उनके हितों के प्रति जागरूक किया, किसान कौम के सांझा मुद्दे तय किए जिस से पूरी जाट कौम में एकता कायम हुई| जब तक कौम के पास मुद्दे नहीं होंगे तब लोग ऐसे ही धर्मों के ठेकेदारों की बातों मे बहक कर बंटते रहेंगे|

लोग बंटने के बहाने खोज रहे हैं, कोई कहता हैं की जो हिन्दू धर्म को छोड़ गया वो जाट नहीं, कोई कहता हैं की इस्लाम, ईसाई, सिक्ख आदि मे जाति नहीं होती इसलिए वे लोग अब जाट नहीं रहे ! आजकल कुछ भाइयों ने एक नया ही तर्क खोजा हैं की जिन जाटों ने धर्म बदला वह डर या लालच में बदला हैं| असल में उन्होने तो क्या खोजा हैं उनके तो कान में धर्म के ठेकेदारों ने फूँक मारी हैं और अब वे भाई उनके शंखों की तरह बज रहे हैं| अगर कोई इनसे पुछे की हमारे जो बुजुर्ग हिन्दू हुए क्या वे भी डर या लालच के कारण हुए थे? इतिहास गवाह हैं की जाट हिन्दू धर्म में आने से पहले बौद्ध थे तो क्या जो बौद्ध से हिन्दू हुए वे भी डर या लालच के कारण हिन्दू हुए? जैसा की सर छोटूराम कहते थे की धर्म इंसान का निजी मामला हैं, एक इंसान चाहे तो दिन मे तीन बार अपना धर्म अपनी आस्था बदल सकता हैं| इसलिए हमें धर्म पर व्यर्थ की बहस कर अपना समय जाया नहीं करना चाहिए| पर जो भाई यह कहते हैं की जो जाट इस्लाम, ईसाई या सिक्ख हो गए उनकी कोई जाति नहीं हैं ऐसे बहके हुए भाइयों की जानकारी के लिए बता दूँ की अखबारों मे जितने भी विवाह संबंधी इश्तिहार आते हैं, किसी भी धर्म के सभी में बकायदा जाति लिखी होती हैं| जैसे की जट्ट सिक्ख, या सुन्नी जाट मुस्लिम के लिए वर या वधू चाहिए| कोई एक आध ही ऐसा इश्तिहार होता हैं जिसमे कास्ट नो बार लिखा होता हैं नहीं तो अखबार में हर धर्म में सभी की जाति के साथ इश्तेहार मिलते हैं| हाँ वो अलग बात हैं किन्ही कारणों से अलग अलग धर्मों को मनाने वाले जाटों ने आपस में रिश्ते बंद कर दिये, सिर्फ अपने अपने धर्म में ही रिश्ते करते हैं, परंतु अपने अपने धर्म में भी सिर्फ अपनी ही जाति में रिश्ते करते हैं, जाति वहाँ भी नहीं छोड़ी

दुनिया का कोई धर्म या पंथ हो सभी में जाट जरूर मिलेंगे| जाट कर्म में विश्वास करने वाली कौम हैं और यहीं कारण हैं की जब भी किसी धर्म मे पाखंड बढ़ता हैं तो जाट नए धर्म या पंथ की तरफ पलायन शुरू कर देते हैं| यहीं कारण हैं की जाट सभी धर्मों मे हैं, ना की किसी डर या लालच की वजह से जाटों ने धर्म बदला| वैसे जाट कहीं भी हो वह सिर्फ अपने पूर्वजों की पुजा में ही यकीन रखता हैं ना की बनावटी भगवानों में| कैप्टन जून साहब, श्री बी. एस ढिल्लों आदि जाट इतिहासकारों

ने लिखा हैं कि जाट सिर्फ भैया पूजते हैं, जिसे पंजाबी मे जठेरे कहते हैं| जो भाई गाँव मे रहते हैं उन्हे इसके बारे मे अच्छे से पता होगा कि बारात चढ़ने से पहले भैया पर माथा टेका जाता हैं और ब्याह के आने के बाद गठजोड़े समेत भैया पर माथा टेकने जाते हैं व नव विवाहित जोड़ा भैया पर छड़ी मारने वाला खेल खेलता हैं|

मैं ज़्यादातर पंजाबी जाटों में रहा हूँ और उन लोगो में मुझे कभी भी यह महसूस नहीं हुआ हैं कि मैं दूसरों मे हूँ| 1984 के बाद से सिक्ख व आर्य समाजी जाटों में यह दरार जरूर बढ़ गई| जब मैंने हरियाणा में रहना शुरू किया तो यहाँ लोगो कि बात सुनकर एक बार तो मेरे मन में भी शक हो गया कि क्या हम लोग वाक्य मे अलग हैं? 1999 -2000 की बात हैं, मैं भिवानी अपने मकान पर कुछ साथियों के साथ बैठा था, वहाँ गली में एक सरदारों का लड़का चावल बेचने आ गया| मैंने उसे बुला लिया और पूछा की कहाँ से है? उसने बताया की पटियाला से हूँ| मैंने उसकी जाति पुछी तो उसने बताया की ' भाई जट्ट हाँ '| वहाँ बैठे औरों की तसल्ली के लिए मैंने उससे पूछा जाट नहीं हैं? उसने कहा की भाई एक ही बात हैं सिर्फ बोलने का फर्क हैं, मैं चौहान गोत्र का जाट हूँ| उस वक़्त हमारी गली में अधिकतर मकान अरोड़ा-खत्री पंजाबियों के थे, जाटों का सिर्फ हमारा ही मकान था| गली मे सभी औरते चावल लेने के लिए इकट्ठा हो गई, सभी उस भाई से पंजाबी मे मोल तोल की बाते कर रही थी, मुझे भी पंजाबी पढ़नी लिखनी आती हैं परंतु मैं उस भाई से अपनी ही बोली मे बात कर रहा था| चावल लेने के बाद जब मैंने उस भाई से पूछा की कितने रुपए दूँ? तो उस भाई ने कहाँ की वीर जी आपा बाद में कर लेंगे पहले इन सबको निपटा दूँ| उसने सबके 22 रुपया किलो के हिसाब से भाव लगाया और आखिर मे मुझे कहता की भाई आप 19 के हिसाब से दे दो| तो वहाँ हमारे पड़ोस की ही एक महिला खड़ी थी वो यह भाव सुनकर पंजाबी में बोली ' साढ़े 22 ते इसदे 19 क्यों? वो भाई बोला 'बीबी साढ़ी गल और हैं'| यह मिसाल उन भाइयों के लिए हैं जो सुनी सुनाई बातों मे अपनों को अलग मान बैठे हैं| सर छोटूराम वाली बात हैं इंसान कितने ही धर्म बदली कर सकता हैं परंतु खून नहीं| खून का रिश्ता सबसे गाढ़ा माना गया हैं| देशी में कहावत हैं की ' अपना मारे छाया मे गेरे'|

हमें सर छोटूराम से ही कुछ सीख ले लेनी चाहिए उनसे बड़ा हमारा कोई रहबर नहीं हो सकता| बहाने नहीं खोजने चाहिए की दूसरे धर्म वाले हमे अपना नहीं मानते तो हम क्यों माने? शुरुआत मैं से ही होती हैं| यदि वो हमें अपना नहीं मानते होते तो सर छोटूराम सर छोटूराम नहीं बनते| सर छोटूराम को मुस्लिम कितना मानते थे इसका एक किस्सा बता देता हूँ| सर छोटूराम ने रोहतक के एक लड़के को राजस्व महकमे मे नौकरी लगवा दिया और उसकी पहली पोस्टिंग झेलम शहर मे आ गई| झेलम शहर जाने के लिए नाव से नदी पार करनी पड़ती थी| जब वह नाव से नदी पार कर रहा था तो मल्लाह ने पूछ लिया 'जनाब किथों आए हो?', वह बोला की रोहतक से आया हूँ| मल्लाह बोला अच्छा छोटूखान के इलाके तो हों? उसने कहा छोटूखान नहीं भाई उनका नाम छोटूराम हैं| मल्लाह ने कहा नहीं भाई छोटूखान हैं| उसने फिर कहा की भाई छोटूखान नहीं छोटूराम हैं और मुझे उन्ही ने नौकरी पर लगवाया हैं| यह सुन मल्लाह हैरान सा हो कर बोला 'अच्छा! एना चंगा बंदा हिन्दू सी!" ऐसा जलवा था सर छोटूराम का जो हिंदु मुस्लिम सिक्ख सबके लिए एक जैसे थे, सब उसको अपना मानते थे| किसी भी धर्म वाले को कभी यह एहसास नहीं होने दिया की सर छोटूराम उनसे अलग हैं| यदि दूसरों के मन में फर्क होता तो सर छोटूराम इतने बड़े नेता नहीं बनते और ना ही वो जो हमारे लिए

कर गए वो सब कर पाते| सर छोटूराम के इस जलवे का कारण था की उसने सबके पेट की बात की, किसान कमेरे वर्ग को धर्म के ठेकेदारों की लूट खसोट से बचाया| इसलिए इन धर्म मजहब के ठेकेदारों की बातों मे बहकना बंद कर दो| यदि किसी धर्म या मजहब को खतरा होगा तो उसे उस धर्म के भगवान या खुदा अपने आप संभाल लेंगे, हमसे ज्यादा फिक्र तो उन भगवान या खुदा को होनी चाहिए की यदि उनकी यह धर्म मजहब नाम की दुकान बंद हो गई तो फिर उन्हे कौन पुजेगा? हम चाहे जिस किसी धर्म को मानते हों पर हमारा सबका पेशा एक ही हैं इसलिए कौम हित के सांझा मुद्दे तय करो फिर देखो कैसे सभी जाट एक नहीं होते हैं| कौम हित की सही तदवीर होगी तो हमारी कौम का नसीब भी जागेगा, नहीं तो हम ऐसे ही लुटते पिटते रहेंगे|

'जय योद्धेय'

जय दादा बड़ा बीर (दादा नगर खेड़ा)!

Author: Rakesh Sangwan, **Publisher:** Nidana Heights, **Date:** 17/02/2015